International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(7): 14-16

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(7): 14-16
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 15-09-2015
Accepted: 19-10-2015

डॉ. रचना वर्मा मोहन
एसोसिएट प्रोपेफसर, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली

रेखा चौधरी
शोध–छात्रा, शिक्षाशास्त्राविभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली

Correspondence
रचना वर्मा मोहन
एसोसिएट प्रोपेफसर, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली

नीतिशतक में वर्णित शैक्षिक तत्त्वों की प्रभावशीलता का अध्ययन

रचना वर्मा मोहन, रेखा चौधरी

प्रस्तुत शोध पत्रा में नीतिशतक में वर्णित शैक्षिक तत्त्वों की प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया है। भर्तृहरि कृत नीतिशतक में कुल सौ (100) श्लोक है। नीतिशतक के इन 100 श्लोकों में जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्षों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला है। इसमें बताया गया है कि किस प्रकार का आचरण करने से मनुष्य का उत्थान हो सकता है तथा किन–किन बातों के कारण उसका पतन हो सकता है। विद्वानों की संगति तथा दुर्जन व्यक्तियों की संगति से हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त विद्वान्, सुजन लोगों के लक्षण, सन्मित्रा के लक्षण, सच्चरित्रा का हमारे जीवन में महत्त्व, मूर्ख के लक्षण, विद्वत्महिमा, विद्या का महत्त्व, राजनीति, धर्म, समाज से सम्बन्धित अन्य विषयों पर भी इसमें अत्यन्त सुन्दर ढंग से प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत शोध में उपर्युक्त वर्णित विषयों में से केवल तीन विषयों (विद्वत्, सुजन और दुर्जन पद्धति को लिया गया है तथा इन तीनों के शैक्षिक तत्त्वों की प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के लिए दक्षिण दिल्ली स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्राों का यादृच्छिक विधि के द्वारा चयन किया गया है। इस अध्ययन के लिए प्रयोगात्मक अभिकल्पों के विभिन्न प्रकारों में पूर्व–पश्च परीक्षण अभिकल्प का प्रयोग किया गया है। स्वनिर्मित प्रश्नावली द्वारा नीतिशतक में वर्णित शैक्षिक तत्त्वों की प्रभावशीलता का मापन किया गया है। प्राप्त परिणामों के विश्लेषण हेतु CR की गणना की गयी तथा यह पाया गया कि नीतिशतक के शिक्षण से छात्राों के नैतिक ज्ञान पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तावना

प्राचीनकाल से आज तक हमारे समाज में शिक्षा को सर्वोच्च स्थान प्राप्त रहा है। हमारे देश में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण संसार में शिक्षा का स्थान सर्वोच्च है। शिक्षा का कार्य बालक में निहित उन क्षमताओं का विकास करना है जिन्हें वह जन्म के समय से ही प्राप्त करता है। गाँधी जी का कथन है कि शिक्षा का उद्देश्य निश्चित ही बालक या बालिकाओं में निहित समग्र मानव को बाहर लाना है। कोई भी शिक्षा सम्यक् नहीं हो सकती अगर वह उपयोगी नागरिक निर्मित नहीं कर सकती। उत्तम नागरिक तभी बनाया जा सकता है जब शिक्षाशास्त्रियों तथा अध्यापकों के समक्ष कुछ नैतिक लक्ष्य हो, भावी समाज के स्वरूप की कल्पना हो। नैतिक लक्ष्यों की अच्छाई या बुराई किसी भी समाज या देश द्वारा मान्य दर्शन पर आधरित होती है। इसलिए नीतिशास्त्रा का शिक्षाशास्त्रा से गहरा सम्बन्ध है। शिक्षाशास्त्रा नीतिशतक के लिए साध्न है। नीतिशास्त्रा ही एकमात्रा ऐसा शास्त्रा है जो मनुष्य के समस्याओं से युक्त जीवन मार्ग में सही दिशा का अवबोधक और पथप्रदर्शक है।

संस्कृत साहित्य में नीति सम्बन्धित अनेक ग्रन्थ है जैसे मनुस्मृति, शुक्रनीति, विदुरनीति, नारदनीति, नीतिशतकम् आदि। नीतिशास्त्राों में बताई गई नीतियाँ न केवल मनुष्यों की सही मार्ग प्रदर्शक हैं, अपितु इनमें बताई गई बातों का पालन करने से मनुष्य अपने जीवन को सही ढंग से जीने और उसे सपफल बनाने में समर्थ हो सकता है। इनमें वर्णित सूक्तियाँ, बालकों के व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास में सहायक हो सकती है। ये सूक्तियाँ बालकों के व्यक्तित्व के सभी पक्षों यथा – शारीरिक, मानसिक, चारित्रिाक, नैतिक आदि का विकास करने में सहायक सिद्ध हो सकती है। अतः यह आवश्यक है कि हमारे बालकों को इन नीतिशास्त्राों और इनमें वर्णित नीतियों का ज्ञान होना चाहिए। इसी कारण यह जानने के लिए कि बालकों को इन नीतिशास्त्राों और इनमें वर्णित ज्ञानपरख बातों की कितनी जानकारी है, शोधकर्त्री ने भर्तृहरिकृत नीतिशतक नामक नीतिशास्त्रा को अपने शोध का विषय बनाया। जिसमें विद्वत्, सुजन एवं दुर्जन पद्धति को मुख्य रूप से लिया गया है। इसमें विद्वान् लोगों की महिमा का वर्णन करते हुए बताया है कि जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश से संसार को प्रकाशित करता है उसी प्रकार विद्वान् लोग भी अपनी विद्वत्ता से अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करके ज्ञान का प्रकाश चारों तरपफ पैफलाते हैं। सुजन पद्धति के सन्दर्भ में सज्जन लोगों की सज्जनता का वर्णन करते हुए भर्तृहरि कहते हैं कि सज्जन व्यक्ति अपने मित्रा को पाप करने से रोकता है, हित की ओर उन्मुख

करता है, गुप्त रखने योग्य बातों को गुप्त रखता है, गुणों को प्रकट करता है, विपत्ति के समय साथ नहीं छोड़ता है तथा समय पर सहायता देता है। दुर्जन लोगों के विषय में भर्तृहरि कहते हैं कि दुष्टों की मित्राता शुरु में बढ़ती है पिफर क्रमशः क्षीण होती हुई और सज्जनों की मित्राता शुरु में छोड़ी पिफर बाद में बढ़ती हुई दिन के पूर्वा; और पर्रा; में बटी छाया के समान होती है। प्रस्तुत अध्ययन में उपर्युक्त तीनों पक्षों को सम्मिलित करते हुए यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि नीतिशतक के शिक्षण से छात्राों के नैतिक ज्ञान स्तर पर प्रभाव पड़ता है अथवा नहीं।

सम्बन्धित साहित्य का पुनर्रीक्षण

शुक्ला, श्रद्धा (1990) ने वाल्मीकि रामायण और उत्तररामचरित का तुलनात्मक अध्ययन करके उनमें निहित नैतिक एवं शैक्षिक तत्त्वों के महत्त्व का प्रतिपादन किया है।

पाठक, माधवानन्द (1999) ने किरातार्जुनीयम् में वर्णित शैक्षिक तत्त्वों का मूल्याघङ्घन आधुनिक काल के सन्दर्भ में किया और पाया कि इस ग्रन्थ में बताये गये शैक्षिक तत्त्वों का महत्त्व आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

गोयल, ललिता (2000) ने अपने शोध ने स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन पर प्रकाश डाला है। स्वामी विवेकानन्द के द्वारा बताये गये आदर्शों और नीतिगत बातों के द्वारा किस प्रकार से बच्चों का सर्वाघीण विकास किया जा सकता है इस पर प्रकाश डाला गया है।

त्रिापाठी, हरीश कुमार (2002) ने अपने शोध में पाया कि प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित शैक्षिक तत्त्वों की उपादेयता आज भी है तथा इनसे प्रत्येक नागरिक मूल्यों को जीवित रखा जा सकता है।

शास्त्राी, डॉ. राकेश (2003) ने नीतिशतकम् में वर्णित श्लोकों की ह युग में उपयोगिता तथा प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला है।

पाठक, डॉ. आर. पी (2008) ने अपनी पुस्तक में वेदों की शिक्षा तथा नीति ज्ञान आदि पर चर्चा की है। इसमें मानव जीवन के कर्तव्य, चरित्रा निर्माण आदि का विशद् विवेचन किया गया है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धरित किये गये हैं –

1. नीतिशतक में वर्णित शैक्षिक तत्त्वों (विद्वत्, सुजन और दुर्जन पद्धति) का छात्राों के नैतिक ज्ञान पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. छात्राों को विद्वान् लोगों की संगति के कारण जीवन पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव के विषय में अवगत कराना।
3. विद्यार्थियों को सत्संगति से होने वाले लाभ के विषय में ज्ञान प्रदान करना।
4. छात्राों को दुर्जन की संगति से होने वाली हानि के विषय में अवगत कराना।

परिकल्पना

प्रस्तुत शोध हेतु शोधकर्त्री ने निम्न परिकल्पना का प्रतिपादन किया है–

- नीतिशतक में वर्णित शैक्षित तत्त्वों (विद्वत् पद्धति, दुर्जन पद्धति और सज्जन पद्धति) के शिक्षण से छात्राों के नैतिक ज्ञान पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सांख्यिकीय परीक्षण हेतु शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है।

शून्य परिकल्पना – नीतिशतक में वर्णित शैक्षिक तत्त्वों (विद्वत् पद्धति, दुर्जन पद्धति और सज्जन पद्धति) के शिक्षण से छात्राों के नैतिक ज्ञान पर कोई प्रभाव नहीं होता है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयोगात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है। जिसमें निम्न चरों का प्रयोग किया गया है –

1. स्वतंत्रा चर – नीतिशतक में वर्णित शैक्षिक तत्त्व
2. परतंत्रा चर – छात्राों का नैतिक ज्ञान स्तर

शोध–अभिकल्प

प्रस्तुत शोध में एकल समूह पूर्व–पश्च परीक्षण अभिकल्प (Single Group Pre-test Post-test Design) का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

अध्ययन हेतु सर्वप्रथम दक्षिण दिल्ली स्थित सरकारी विद्यालयों में से एक विद्यालय का चयन सोद्देश्य प्रतिदर्श चयन विधि के माध्यम से किया गया। न्यादर्श के लिए चयनित विद्यालय की आठवीं कक्षा के एक वर्ग का चयन यादृच्छिक पद्धति से किया गया। तत्पश्चात् उस वर्ग के 55 छात्राों में से यादृच्छिक पद्धति से 40 छात्राों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया।

उपकरण

उद्देश्यों के अनुरूप मापन की दृष्टि से मानकीकृत परीक्षण की अनुपलब्धता के कारण शोधकर्त्री ने स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया। प्रश्नावली के निर्माण के लिए सर्वप्रथम सम्बन्धित विषय वस्तु का विश्लेषण किया गया। उसके पश्चात् ''नीतिशतक में वर्णित तथा शोध हेतु चयनित शैक्षिक तत्त्वों पर आधरित नैतिक ज्ञान'' से सम्बन्धित 30 पदों का निर्माण किया गया। प्रत्येक पद में चार विकल्प दिये गए जिसमें एक विकल्प सही तथा शेष 3 विकल्प गलत थे। सही उत्तर को एक अघङ्घ प्रदान किया गया। प्रश्नावली की जाँच के लिए प्रश्नावली की प्रतियाँ पाँच विषय विशेषज्ञों को दी गई तथा इनसे प्रश्नों एवं विकल्पों के सम्बन्ध में विचारों को आमन्त्रित किया गया। इस प्रकार जाँच करके विशेषज्ञों द्वारा दिए गए परामर्शों के आधर पर प्रश्नावली का द्वितीय प्रारूप तैयार किया गया। तथा छोटे समूह पर पूर्व परीक्षण (Try Out) किया गया। भाषागत अशुद्धियों तथा कठिनाइयों का समाधन करके अन्तिम रूप से 20 पदों का चयन कर प्रश्नावली का निर्माण किया गया।

प्रदत्त सघङ्घलन

प्रदत्त सघङ्घलन के लिए पूर्व–पश्च परीक्षण अभिकल्प के अन्तर्गत छात्राों को पहले स्वनिर्मित प्रश्नावली दी गई तथा उनके उत्तर प्राप्त किये गये। उसके पश्चात् सम्पूर्ण नीतिशतक में से तीन तत्त्वों (विद्वत् पद्धति, सज्जन संगति तथा दुर्जन संगति) से सम्बन्धित चौबीस श्लोकों को दो सप्ताह पढ़ाया गया। विभिन्न उदाहरणों तथा सहायक सामग्री के प्रयोग द्वारा विद्यार्थियों को उनमें निहित शैक्षिक तत्त्वों को स्पष्ट किया गया। उसके पश्चात् उन विद्यार्थियों को पुनः वही प्रश्नावली दी गई तथा ऑकड़े एकत्रिति किये गये। दूसरी बार प्राप्त ऑकड़ों की जाँच की गई तथा अघङ्घ प्रदान किये गये। इस प्रकार पूर्व–पश्च परीक्षण अभिकल्प के द्वारा प्रदत्त सघङ्घलन किया गया।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान मानक विचलन और टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया।

तालिका संख्या I: पूर्व तथा पश्च परीक्षण प्राप्ताघङ्घों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, मध्यमानों के मध्य अन्तर की प्रमाणिक त्रुटि एवं 't' मान

परीक्षण	छात्राों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमानों के मध्य अन्तर की प्रमाणिक त्रुटि	't' मान
पूर्व	40	11.675	4.137	0.68	8.75''
पश्चात्	40	17.625	1.316		

** .01 स्तर पर सार्थक

.01 स्तर पर सार्थकता मूल्य = 2.64

प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण एवं व्याख्या

इस प्रकार तालिका से स्पष्ट है कि प्राप्त 't' मान = 8.75 है जो.01 स्तर व कत्रि 78 के क्रान्तिक मान 2.64 से अधिक है। अतः शिक्षण से पहले तथा शिक्षण के बाद छात्राों के प्राप्ताघङ्कों में 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर है।

अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है। शून्य परिकल्पना के अस्वीकार होने पर शोध परिकल्पना स्वीकृत हुई तथा यह पाया गया कि आज भी नीतिशतक में वर्णित शैक्षिक तत्त्वों (विद्वत्, सुजन और दुर्जन पद्धति) के शिक्षण से छात्राों के नैतिक ज्ञान का विकास किया जा सकता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त व्याख्या से ज्ञात हुआ कि नीतिशतक के तीनों तत्त्वों (विद्वत्, दुर्जन एवं सज्जन पद्धति) के शिक्षण से छात्राों के नैतिक ज्ञान पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

शैक्षिक उपादेयता

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट है कि नीतिशतक के शिक्षण से छात्राों के नैतिक ज्ञान पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। नीतिशतक के शैक्षिक तत्त्वों का महत्त्व प्राचीन काल से आज तक उसी प्रकार है तथा आगे भी इसका महत्त्व इसी प्रकार रहेगा। प्रस्तुत अध्ययन के आधर पर यह कहा जा सकता है कि अगर नीतिशतक का शिक्षण प्रारम्भ से ही छात्राों को करवाया जाये तो छात्राों के ज्ञान का विकास होगा और उनके चारित्रिाक नैतिक आदि विकास करने में भी नीतिशतक सहायक सिद्ध होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गोयल, ललिता, (2000), स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन, शिविरा पत्रिाका, राजस्थान राज्य शिक्षा विभाग
2. पाठक, आर. पी, (2008), भारतीय परम्परा में शैक्षिक चिन्तन, कनिष्का प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली
3. पाठक, माधवानन्द, (1999), किरातार्जुनीयम् में निहित शैक्षिक तत्त्वों का मूल्याघङ्कन, एम. एड., लघुशोध प्रबन्ध, श्री लाल बहादुर शास्त्राी राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली
4. शुक्ला, श्रद्धा, (1990), वाल्मीकि रामायण तथा उत्तररामचरित का तुलनात्मक अध्ययन, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
5. शास्त्राी, राकेश, (2003), नीतिशतकम्, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली
6. त्रिापाठी, हरीश कुमार, (2000), भीष्म पर्व में निहित नैतिक एवं सामाजिक शिक्षा का विवेचनात्मक अध्ययन, एम. एड., लघुशोध प्रबन्ध, श्री लाल बहादुर शास्त्राी राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली